भ्रूण

डॉ. सुनील जाधव

नव्या प्रकाशन
सुरेंद्र नगर, गुजरात

ISBN : 978-93-82771-00-5

पुस्तक	:	**भ्रूण**
लेखक	:	**डॉ. सुनील जाधव** मो. 9405384672
प्रकाशक	:	**नव्या प्रकाशन** सुरेंद्र नगर, गुजरात मो. 9662514007
मूल्य	:	50/-
संस्करण	:	प्रथम, 2012
शब्द सज्जा	:	विजय चित्तरवाड
मुद्रक	:	ओरीएन प्रिंटर्स

BHRUN

By : Dr. Sunil Jadhav

Price : Rs. fifty only

आदरणीय

अशोकरावजी चव्हाण

पूर्व मुख्यमंत्री, महाराष्ट्र राज्य

एवं

सौ. अमिताभाभी चव्हाण

उपाध्यक्ष, श्री शारदा भवन एज्युकेशन सोसायटी

को सादर

भूमिका

कभी मन में विचार आता है कि आखिर कवि/लेखक रचना का सृजन क्यों करते हैं, बरबस सुमित्रानंदन पंत की यह पंक्तियाँ याद आती हैं ।

वियोगी होगा पहला कवी,
आह से उपजा होगा गान।
उमडकर आँखोसे चुपचाप,
बही होगी कविता अन्जान।

डॉ. सुनील जाधव के विषय में भी यह सटीक बैठती हैं । 'भ्रूण' एकांकी, कन्या भ्रूण हत्या से आहत डॉ. सुनील जाधव के द्वारा सामाजिक विसंगतियों के विरोध में एक मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति हैं।

लेख, कविता, कहानी पाठकों से संवाद का एक सशक्त माध्यम है परन्तु एकांकी निश्चित ही एक कदम आगे है, इसमें पाठकों से संवाद मात्र शब्दों तक सीमित नहीं रहता वरन् प्रत्येक संवाद, पात्र के जरिये उनके ऱ्हदय की गहराई तक उतरता हैं। वह पाठक ही नहीं दर्शक बन नाटक के पात्रों के साथ संवाद करता है, उनकी संवेदनाओं को बांटता है, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव उनके मन-मस्तिष्क पर पडता हैं।

आधुनिक समाज में कन्या भ्रूण हत्या की घिनौनी मानसिकता को बदलने के उद्देश्य से लिखे गये एकांकी भ्रूण में, डॉ. सुनील जाधव ने मादा भ्रूण की हत्या एवं बेटियों के प्रति पूर्वाग्रह से ग्रसित भेदभाव की ज्वलन्त समस्या को दर्शाया है । उनके एकांकी में समाज की संकीर्ण सोच एवं कुरीतियों से उपजे बेटी के हर दर्द को महसूस किया जा सकता हैं। एकांकी का हर संवाद समाज के लिए एक प्रश्न छोडता है और समाज की रूढियों एवं कुप्रथाओ पर प्रश्नचिन्ह लगाता प्रतीत होता है।

चाहे वह कन्या भ्रूण हत्या हो या बेटियों के प्रति भेदभाव या फिर बेटियों का उत्पीडन या तिरस्कार, हर जगह व्यापक संवेदना की अनुभूति होती हैं। घर परिवार एवं समाज की सोच में बदलाव लाने और बेटियों के जीवन को उष्मा से भर देनेवाले अनेक आत्मीय संदर्भ एकांकी का केन्द्र बनते हैं जो एकांकी को विस्तृत सामाजिक परिधि प्रदान करते है। इस एकांकी में जहाँ आधुनिक कहलानेवाले समाज में प्रचलित कन्या भ्रूण हत्या के कटु सत्य को वेबाकी से दर्शाया गया है। वहीं एक बेटी होने की पीडा, वेदना व छटपटाहट के मार्मिक चित्रण के साथ ही माँ की ममता की रागिनी को भी ध्वनित किया गया है । एकांकी का यह संवाद इसी भावना को स्पष्टतः दर्शाता है–

''मैंने अपनी बेटियों को लडकों की तरह पाला हैं । मैंने कभी–भी लडकी–लडका ऐसा भेदभाव किया नहीं। तू इन्हें इतना पढा लिखाना, इतना बडा बनाना कि इनकी प्रगति से आसमान भी बौना हो जायें। हर बेटों को चाहनेवाला व्यक्ति अपने घर में बेटी ना होने पर पछतायें। ...उन लोगों को करारा तमाचा देना, जो बेटियों को बोझ समझते है...''

सामाजिक सरोकार से लिखा गया एकांकी 'भ्रूण' अपने संदेश को प्रतिपादित करने में सफल रहा है और सामाजिक बुराई को आइना दिखाता कठोर ऱ्हदय को भी झकझोरने में समर्थ है। साथ ही सामाजिक विसंगतियों से आगाह करने, सोच में बदलाव लाने, जन चेतना जागृत करने एवं समाज को उसकी वास्तविक स्थिति से रूबरू करने में भी सफल रहा है। निश्चित ही 'भ्रूण' एकांकी अपने समूचे विडम्बनात्मक यथार्थ के साथ समाज में बेटियों के प्रति रूढियों कुरीतियों को ध्वस्त करने में समर्थ है और समाज में नई सोच और जागरूकता की प्रेरणा की संजीवनी प्रदान करने की क्षमता से संपन्न है।

एकांकी में स्त्री के प्रति एक सकारात्मक दृष्टि निरंतर दिखायी पडती है जो स्त्री के वजूद को न केवल उजागर करती है वरन् उसके

अस्तित्व, अस्मिता को सहेजे रखना चाहती है। ''मैं आप सब से पूछता हूँ, आखिर क्यों मारो? क्या तुम भूल गये तुम्हारा जन्म किसी स्त्री से हुआ है। यही स्त्री तुम्हारी माँ है, बेटी है, बहन है, पत्नी है। अरे परंपरा से ग्रसित मूर्ख लोगों नारी वह शक्ति है, जो बडे से बडे साम्राज्य की नींव हिला सकती है।''

एकांकी भ्रूण में एक ओर जहाँ बेटियों के साथ हो रहे अमानवीय व्यवहार की पीडा छलकती है। वहीं समाज की सोच में आ रहे बदलाव की दस्तक भी स्पष्टतः सुनाई देती है। जो नारी जाति के प्रति भावुक प्रतिबद्धता एवं संवदेनात्मक अनुभूति का ताना-बाना बुनने में पूर्ण है । पितृसत्ताक सोच, सामाजिक विडम्बनाओं, पारिवारिक संस्पृशों की मार्मिक अभिव्यक्ति के साथ नारी के चेतन-अचेतन में चल रहे उद्वेलनों एवं अन्तर्द्वंद्वों की सशक्त अभिव्यक्ति इसका मुख्य आकर्षण है । निश्चय ही समाज और दुनिया की सोच बदलने, जन जागरूकता फैलाने में यह एकांकी उपयोगी और सार्थक सिद्ध होगी ।

मिथलेश जैन

श्रीमती मिथलेश जैन
सी-४७, कमलानगर, आगरा

... जीवित रहेगा भ्रूण!

सबसे पहले डॉ. सुनील जाधव को 'भ्रूण' एकांकी के लिए बधाई! सुनील मनोभावों का विवरण करने में महारथी है। 'भ्रूण' के माध्यम से उनकी कलम स्त्री-अस्तित्व को क्रांतिकारी पायदान पर ले जाकर बिठाती है। इस एप्रोच के लिए डॉ. सुनील जाधव बधाई के पात्र है।

हमारा देश, विविधताओं का देश है। लोकतांत्रिक, राजनीतिक, सामाजिक दृष्टि वैविध्य भी देती है और कई मायनों में एकरूपता भी देती है। हरियाणा के किसी गांव में बेटी के जन्म पर नगाडे नहीं बजते जबकि मेघालय में बेटी का जन्म शगुन का प्रतीक है। राजस्थान के किसी गांव में बेटी पैदा होने पर मुर्दनी छा जाती है तो वहीं केरल के किसी गांव में बिटिया की पैदाइश खुशियों का पैगाम लाती है यही विविधता है। लेकिन विविधता के बावजूद एकरूपता पूरे देश में है। वह एकरूपताए है-लिंगीय! पुरुष, पुरुष होता है और स्त्री सचमुच स्त्री! हमारे देश में कुछ ऐसे प्रदेश (क्षेत्र) है जहां, सिर्फ पुरुष-सत्ता है, तो कुछ ऐसे भी प्रदेश हैं जहां मातृशक्ति सत्ता-संपन्न है। जैसे, पाँच कोस पर पानी बदलता है और २० कोस पर बानी बदलती है वैसे ही मेरा अनुभव यह कहता है कि हर एक कोस पर हमारा आचार-विचार भी परिवर्तित होता है।

हमारे महाराष्ट्र में गर्व से कहा जाता है - पहली बेटी, धन की पेटी! मुझे सचमुच नहीं पता कि महाराष्ट्र की तरह कितने ऐसे प्रदेश है जो बेटी के जन्म पर बर्फी बांटते है। पर यह बात कहने-सुनने में अच्छी लगती है। सत्य की करवट किस दिशा की होगी, समझना मुश्किल होता है। मैं रेखांकित करना चाहती हूं कि मेरे महाराष्ट्र में कई प्रांत (क्षेत्र) ऐसे

भी हैं जहां बेटी को जन्म के तुरंत बाद एक नाम दे दिया जाता है, वह होता है – नकुषा या नकोशा। यानी–नको असलेली मुलगी! चाहत के बगैर जो बेटी पैदा होती है उसका नाम मेरा सुसंस्कृत प्रदेश भी अनचाहा कहकर दुत्कार देता है।

मुझे पता है कि मेरे देश के कई गांव बेटी के जन्म पर खुशियाँ मनाते है। मेरा देश गाय की पूजा करता है। गाय की कोख से पैदा होनेवाली बछिया सम्मान पाती है लेकिन बछडा कुछ ही महीनों के बाद कसाइयों को बेंच दिया जाता है। यहां मैं उल्लेखित करना चाहती हूँ कि पूरा का पूरा ढांचा अर्थतंत्र से जुडा होता है। बछडा अधुनातन संदर्भो में उत्पादक नहीं है। बछिया, बडी होकर दूध देती है। यानी वह कामधेनु है। इसी तरह परंपरानुगत बेटी हमारे यहां 'पराये घर' ही जाती है। जिसे विवाह के पश्चात किसी और के घर जाना है, किसी और का वंश चलाना है। परंतु, बेटा कमा कर लाएगा और बुढापे में मां–बाप की लाठी बनेगा।

तो मुद्दा पुत्र या पुत्री का नहीं है, मुद्दा दुहित और दुहिता का है, अर्थतंत्र का है, उपयोगिता का है। इसी समाज में गाय की बछिया उपयोगी है तो वह पूज्य है। तो वह स्वीकार्य है। तो वह पोषणीय है। इसी समाज में बिटिया, पैदा होने से पहले ही पराया धन है। पराया करने से पहले दहेज का बोझ है। पराया होने के बाद भी वह खर्चों की किश्त है।

तो मुद्दा यह है कि बछिया कमाती है। अगर बछिया की तरह बिटिया भी कमाए तो वह अवांछनीय नहीं होगी... तो वह 'भ्रूण' सिर्फ भ्रूण बन कर नहीं मर जाएगा... तो वह 'भ्रूण' आकार लेगा... तो वह 'भ्रूण' शक्ति बनेगा... तो वह 'भ्रूण' आदर्श बनेगा, उपयोगिता का आदर्श!

सुनो मेरे देश के लोगों, अगर वह भ्रूण आकार न लें पाता तो

तुम्हारा भी आकार न होता। भ्रूण को मारना आसान है क्योंकि वह प्रतिकार नहीं करता। तुम आसानी से दफना सकते हो किसी भ्रूण को...

सुनो मेरे देश के लोगों, हत्या कर सकते हो किसी अपने की! मार सकते हो जन्म के बाद भी दूध में डुबो कर, पर बहुत मुश्किल है अपने दंभ को दबाकर किसी को पनपने देना। किसी को बढने देना। किसी को फलने देना। किसी को फूलने देना... क्योंकि फलने और फूलने के बाद कली को आकार मिलता है। कली फूल बनती है।

कली का फूल में रूपांतरण कोई भूल नहीं होती साहिबान! ये प्रकृति की निरंतर प्रक्रिया है। स्त्री भ्रूण के हत्यारों, तुम कत्ल कर सकते हो किसी लोथडे को। पर नहीं मार सकते शक्ति-पुंज को। स्त्री-शक्ति है। प्रकाश है। विस्तीर्ण आकाश है। खुशियों का इंद्रधनुष्य है।

मनु! इडा और श्रद्धा जब तक जीवित है तब तक जीवित रहेगा भ्रूण!

...भ्रूण... फर्क नहीं पडता - वह स्त्री है या पुरुष।

...सिर्फ उपयोगी होना चाहिए...

सिर्फ बछिया होना चाहिए...

...सोना गाछी की वेश्या के भ्रूण को भी कत्ल नहीं किया जाता, मेरे देश के लोगों!

क्योंकि वह कमाऊ है...!

- सुमन सारस्वत

मुंबई

''भ्रूण'' के बहाने...

'भ्रूण' प्रकाशित रूप में मेरी पहली एकांकी है। 'भ्रूण' से पहले मैंने कई एकांकीकाएँ युवक महोत्सव के लिए लिखी थी। युवक महोत्सव में मंचित कई एकांकिकायें नई दिशायें प्रदान करनेवाली होती हैं क्योंकि यह महोत्सव युवकों का होता हैं। यहीं युवक भविष्य में नयें आधुनिक विचारोंवालें समाज की स्थापना करते हैं। पुरानी पीढ़ी शायद लीक से ना हटे किन्तु हम नयें प्रगतिशील विचारों का बीजारोपण आनेवाली पीढ़ी में कर, समझदार, भीतर और बहार से सभ्य, प्रगतिशील समाज का निर्माण करने का प्रयास कर सकते हैं।

''भ्रूण हत्या'' सभ्य एवं असभ्य समाज के सम्मुख एक बहुत बड़ा और विशाल प्रश्न बनकर उभर कर आ रहा हैं। आज विज्ञान और तकनीक के नये-नये अविष्कारों से जीवन की कठिन लगनेवाली डगर सरल और सुविधा जनक बन गई हैं। पर विज्ञान जहाँ वरदान बनकर सम्मुख आया वहीं इन्सानों ने उसके दुरूपयोग से अपनी अमानवीयता भी सिद्ध कर ड़ाली हैं। माँ के गर्भ में पल रहे स्त्री भ्रूण का पता चलते ही लड़केरिया बीमारी से ग्रस्त समाज उस अजन्मे भ्रूण की गर्भ में ही गला रेत कर निर्मम हत्या करने से पीछे नहीं हट रहा हैं।

वर्तमान समाज जो लड़की-लड़का भेद नहीं करता। उसी समाज का एक हिस्सा लड़की को बोझ मानता हैं। अपने ही परिवार में उस लड़की को दोयाम दर्जा दिया जाता हैं। लड़के को भविष्य का सहारा मानकर उसकी हर जायज और नाजायज इच्छा पूरी करता हैं। पर जब समय आता हैं, माता-पिता के पालन का ऐसे में वैसे कई लड़के

मानवीय मूल्यों को ठोकरों से उड़ाते हुए दिखयी देते हैं। तब वहीं माता-पिता अपने भाग्य को कोसते हुए दृष्टिगोचर होते हैं।

जिस घर में लड़की होती हैं। वह खुशी से उसे स्वीकार कर जब भेदभाव नहीं करता, तब समाज का एक विकृत अंश उस परिवार को ताना मार-मार कर अधमरा कर देता हैं। यदि आज वर्तमान समाज का हम सूक्ष्म रूप से अध्ययन करते हैं, तब पता चलता हैं कि स्त्री भ्रूण हत्या लड़कियों की हत्या, दोयाम दर्जे के कारण, देश के ऐसे कई राज्य हैं, जहाँ पर लड़कों की आधी उम्र बीतने के बावजूद भी विवाह के लिए लड़कियाँ नहीं मिल पा रही हैं। एक निजी समाचार चैनल के अनुसार - स्त्री जनन दर घटने से एक ही लड़की से परिवार के चार-चार लड़के विवाह करते हुये दिखयी देते हैं। यहाँ तक की लड़कों के परिवार लड़की के परिवार को दहेज देते हुये दिखयी देते हैं।

लड़कियों के प्रति इस प्रकार के रवय्ये के लिए जितना जिम्मेदार समाज का सभ्य कहा जानेवाला पूर्वाग्रस्त, रूढ़ी-परम्परा से पीड़ित असभ्य समाज हैं, उतने ही इसके लिये लड़कियों के माता-पिता, डॉक्टर आदि भी जिम्मेदार हैं। आवश्यकता हैं जागरूकता, शिक्षा की, नये विचारों को पूरी तरह से बो कर फलने-फुलाने की। आनेवाली पीढ़ी के मन-मस्तिष्क में ये विचार यदि विराजमान हो जाये तो वह दिन दूर न होगा जब समाज में पूर्वाग्रह दूषित कोई न होगा।

एकांकी लिखते समय स्वजन और परिजन तथा दोस्तों की प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रेरणा रही हैं। मैं उनके प्रति आभार स्वरूप उनके नाम यहाँ उद्धृत कर रहाँ हूँ। पूर्व मुख्यमंत्री अशोकराव चव्हाण, मंत्री डी.पी. सावंत, प्राचार्य एन.व्ही. कल्याणकर, डॉ. जगदीश कदम,

उपप्राचार्य रमा नवले, डॉ. सुजात अली, डॉ. अजय टेंगसे, डॉ. जोगेन्द्रसिंह बिसेन, डॉ. व्ही.सी. ठाकुर तथा छात्र मयूर, अम्बादास, आशीष आदि।

साथ हीं मैं मिथिलेश जैन तथा सुमन सारस्वत जी का आभारी हूँ जिन्होंने इस एकांकी की भूमिका लिखना स्वीकार किया। ''नव्या'' पत्रिका के संपादक पंकज त्रिवेदी जी ने नव्या प्रकाशन से पुस्तक प्रकाशित किया उनके प्रति आभार। पिता गुलाबसिंग, माता शकुंतला, भाई अनिल, संदीप, राजू, पत्नी वैशाली, पुत्री तनिष्का, पुत्र तन्मय आदि ने मुझे लिखने के लिए वातावरण दिया।

– डॉ. सुनील जाधव
नांदेड

इस एकांकी में वर्णित कहानी और पात्र पूरी तरह से काल्पनिक होकर भी समाज की सच्चाई को व्यक्त करती हैं। इस एकांकी का उद्देश्य मात्र समाज में जागृति लाना हैं, न कि किसी के हृदय को ठेस पहुँचना । ना ही किसी के पेशे का विरोध करना हैं। यह एकांकी सच्ची भावना लेकर चलती हैं। मुझे आशा हैं कि सुजान पाठक तथा दर्शक मेरी इस एकांकी को पसंद कर नव सृजन के लिये प्रेरणा देंगे ।

भ्रूण
(एकांकी)

– डॉ. सुनिल जाधव

दृश्य – एक

(शहर का जाना–माना अस्पताल – ऑप्रेशन थियेटर में अभिजीत की प्रेग्नंट पत्नी सुप्रिया जिंदगी और मौत के बीच लढ रही है । भीतर से सुप्रिया की लगातार दिल को चीरनेवाली आवाज आ रही है । बाहर अभिजीत मेज पर दुःखी अवस्था मे बैठा है । उसकी नजरें ऑप्रेशन थियेटर के बल्ब/दरवाजे पर टिकी हुई है । कभी बेचैन होकर टहलने लगता है । दूसरी ओर एक कोने में एक पगली स्त्री हाथ में गुडिया लेकर गा रही है – मेरा मुन्ना है तू.... ओ मेरी आँखों का तारा है तू...। प्रकाश पगली स्त्री पर केन्द्रित । ऑप्रेशन थियेटर से डॉक्टर बाहर आता है – प्रकाश पगली स्त्री से हटकर अस्पताल में होता है।)

डॉक्टर : अभिजीत पेशंट बहुत सीरियस है । बच्चा या माँ दोनो में से किसी एक को बचाया जा सकता हैं ।

अभिजीत : (दुःखी स्वर में) नहीं–नहीं ऐसे नहीं हो सकता । Please डॉक्टर साहब, दोनो को बचा लीजिए । मैं अपनी पत्नी से बेहद प्यार करता हूँ । मैं उसके बिना जी नहीं सकता ।

डॉक्टर : देखो अभिजीत समझने की कोशिश करों । मैं तुम्हारी भावनाओं को समझ सकता हूँ, पर मैं कुछ नहीं कर सकता ।

अभिजीत : ऐसा न कहो डॉक्टर साहब । चाहे जितना भी खर्चा हो मैं देने के लिए तैयार हूँ। उन्हे बचा लीजिये, डॉक्टर साहब, उन्हे बचा लीजिये...। (रह-रहकर भीतर से सुप्रिया की दिल दहला देनेवाली आवाज आ रही हैं) कोई न कोई उपाय तो होगा डॉक्टर साहब, जिससे बच्चा और माँ दोनो को बचाया जा सकता हो । मुझसे उसका दर्द सहा नहीं जाता । भगवान के लिये जल्दी से कुछ कीजिये।

डॉक्टर : देखो, मैं अपनी और से पूरी-पूरी कोशिश करता हूँ।

अभिजीत : कोशिश नहीं डॉक्टर साहब (पैरों को पकडते हुए) मैं आपके पाव पडता हूँ। (रोते हुए) बचा लीजिये उसे...

डॉक्टर : उठो अभिजीत, जीवनदाता तो वह भगवान हैं, सबसे बडा डॉक्टर। आप उनसे प्रार्थना कीजिये कि मैं दोनो को बचा पाऊँ...। मैं चलता हूँ...।

(ऑप्रेशन थियेटर के भीतर चला जाता है। बाहर अभिजीत की वही बेचैंन अवस्था है।)

गंगूबाई : (गंगूबाई कामवाली का आगमन, अभिजीत के कंधो पर हाथ रखते हुए साहेब धीरज धरो, कुछ नहीं होगा। गणपती बप्पा हमारे साथ है। मेरा गणपती बप्पा कुछ नहीं होने देगा। मेरी मालकिन टनटन होकर बच्चे को लेकर बाहर आयेगी, देखना...। (कुछ समय के लिए प्रकाश पगली स्त्री पर - मेरा मुन्ना है तू... और अस्पताल में प्रकाश...।)

(भीतर से बच्चे के रोने की आवाज ऊयाँ... ऊयाँ...। थोडी देर बाद डॉक्टर मुस्कुराते हुए बाहर आता है।)

डॉक्टर : (अभिजीत की और देखते हुए) बधाई हो अभिजीत!

बधाई हो! जच्चा और बच्चा दोनो सुरक्षित हैं। आपके प्यार और प्रार्थना ने दोनो को बचा लिया।

अभिजीत : (वह बेहद खुश है। मानो उसे दुनिया की सारी खुशियाँ मिल गई हो। डॉक्टर के पैरो में पडते हुये...।) डॉक्टर साहब आप साक्षात भगवान हो। आप मेरी जिंदगी में भगवान बनकर आये हो। आपने मेरी खुशियों को लूटने से बचा लिया। मैं आपका यह ऋण कैसे चूका पाऊँगा। मांगिये डॉक्टर साहब... आज जो मांगना है मांगिये...। मैं आज अपना सबकुछ आपको सोंपने के लिये तैयार हूँ। मैं आपको नहीं बता सकता कि आज मैं कितना खुश हूँ। आज मुझसे कोई अपनी जिंदगी भी मांगले तो मैं खुशी-खुशी देने के लिये तैयार हूँ। मांगीये डॉक्टर साहब आपको क्या चाहिये ।

डॉक्टर : अपनी जान को सलामत रखना अभिजीत, अब अपनी जिंदगी पर सिर्फ तुम्हारा ही अधिकार नहीं। किसी और का भी अधिकार हैं। और हां मुझे कुछ नही चाहिये। तुम्हारे चेहरे पर की खुशी को देखकर मैंने आज सबकुछ पा लिया हैं। मैंने आज सिर्फ तुम्हारी पत्नी और बच्चे को ही नहीं बचाया बल्कि अपने आपको भी बचाया है । मैंने डॉक्टर पर किये जानेवाले विश्वास को बचाया है । मैंने साक्षात भगवान के अंश को बचाया है, मैंने तुम्हारी लड़की को बचाया है।

अभिजीत : लड़की... मुझे लड़की हुई है (प्रसन्नता से) मैं खुशी के मारे आपको पुछना ही भूल गया था । आपने तो मुझे आज दुगनी खुशी दी हैं। दिल करता है मैं आपके हाथों को चुमलू (हाथ पकड़कर चुमता है) हमारे खानदान में

बरसो से लड़की नहीं हुई। यह लड़की नहीं साक्षात देवि बनकर आयी हैं। जिसने अपनी माँ को मौत की आघोष से बाहर खींच कर लाया है।

(झुमते हुये) आज मैं सारे शहर को मीठाई बाटूंगा। ढोल बजेगा, जश्न होगा। आज शहर में चुल्हा नहीं जलेगा। मेरी बेटी के आने की खुशी में सारे शहर को खाने की दावत दूंगा। डॉक्टर साहब मैं चलता हूँ, आज मुझे बहुत काम हैं। मीठाई खरिदनी है और हर घर में मीठाई बाँटनी हैं, जश्न की भी तैयारी करनी हैं।

(अभिजीत मीठाई लेने के लिये चला जाता है। साथ में गंगूबाई भी चली जाती है। थोडी देर बाद पिछे से ढोल–ताशे की आवाज तीव्र से धीमी होते हुए रूक जाती है।)

डॉक्टर : (प्रकाश डॉक्टर पर केन्द्रित अपने आपसे...।) अभिजीत, आज मैं भी बहुत खुश हूँ। बरसो से जो काम मुझसे नहीं हो पाया। वह आज मैंने कर दिखलाया है। आज मैंने तुम्हारी पत्नी और लड़की के रूप में मानों अपनी लड़की और पत्नी को बचा लिया हैं। ...मैने अपनी जिंदगी में कितने पाप किये हैं। न जाने कितनी माँओं की कोख उजाड दी। न जाने कितनी स्त्री भ्रूनों की गला रेतकर निर्मम हत्या कर दी। रूपयों के लालच में मैं भूल गया था कि भगवान के बाद डॉक्टर का ही दूसरा नाम लिया जाता हैं। मैंने डॉक्टर के नाम को कलंकित कर दिया था । मैं इस दुनिया का सबसे बडा पापी हूँ। अभागी हूँ। जिसने अपनी पत्नी से लड़के की अपेक्षा करते हुए गर्भ में पल रहे स्त्री भ्रून की हत्या कर दी। (अपने हाथों को

जमीन या अन्य वस्तु पर पटकते हुए)। यही... यही, यही... पापी हाथ है वे। इसी.... इसी हाथों से उस भ्रून का गला दबाया था। वह भ्रून तड़फ रहा था। मानो वह कह रहा हो... मुझे मत मारो... मुझे मत मारो। मैंने क्या बिगाड़ा है तुम्हारा पप्पा, मुझे मत मारो। मैं इस दुनिया में आना चाहती हूँ। इस दुनिया को देखना चाहती हूँ। पर मैं नही माना। मैं राक्षस बन गया था। पत्थर दिल राक्षस। मैंने खत्म कर दिया उसको। इस दुनिया में आने से पहले ही। आखिर क्या हुआ। मेरी पत्नी भी वहाँ चली गयी (आकाश की और देखकर) उसके साथ। अब वे दोनो तारे बनकर चमकते हैं। जिसे मैंने अपनी जान से भी ज्यादा चाहा था। मैंने अपने कुकर्मो से खो दिया। (रोता हैं) (आँसू पोंछते हुयें) पर आज में खुश हूँ, मैंने आज एक लड़की को बचाया है। आज मेरी पत्नी बहुत खुश होगी। (आकाश की ओर) वो देखों, वो मेरी पत्नी मुस्कुरा रही है। (अंधेरा–पगली पर प्रकाश केन्द्रित)

पगली : मेरा मुन्ना है तू... (धीरे–धीरे अंधेरा)

दृश्य – दो

(घर का दृश्य–इक्कीस सालबाद। दिवार पर अभिजीत की तस्वीर टंगी है। डॉ. आलोक और सुप्रिया तस्वीर पर फुलों की माला चढा रहे हैं। अभिजीत की पाँच साल पहले एक दुर्घटना में मृत्यु हो गयी है। आलोक सुप्रिया के हाथों में हाथ डालकर कहता है।)

आलोक : आज अभिजीत को जाकर पाँच साल बित गये। अब भी मुझे ऐसा लगता है कि अभिजीत हमारे ही भीतर कहीं जीवित है। अभिजीत जब अस्पताल में अंतिम साँसे गिन रहा था। तब तुम्हारा हाथ ऐसे ही मेरे हाथों में देते हुए कहा था। भैय्या आलोक मैं तुम्हे अपनी अमानत सोंप रहा हूँ। मुझे पूरा यकिन है कि तू इन सब का खयाल रखेगा। तू मुझे वचन दे कि सुप्रिया को तू अपने जीवनभर साथ रखेगा। तू इसे अपनी पत्नी रूप में स्वीकार करेगा। मेरी चारों बेटियों को पिता का प्यार देगा। आलोक मैने अपनी बेटियों को लड़कों की तरह पाला हैं। मैने कभी-भी लड़की लड़का ऐसा भेदभाव नहीं किया। तू इन्हे इतना पढ़ा लिखाना, इतना बड़ा बनाना कि इनकी प्रगति से आसमान भी बौना हो जायें। हर बेटों को चाहनेवाला व्यक्ति अपने घर में बेटी ना होने पर पछतायें। ...उन लोगों को करारा तमाचा देना, जो बेटियों को बोझ समझते हैं... चलता हूँ मैं...। कहते हुये उसने इसी हाथों में दम तोड़ा था... और वह चला गया हमें छोड़कर...। (दोनों की आँखे तरल हो जाती हैं । ऐसे में गंगूबाई ने सबकुछ सुन लिया था। उसकी भी आँखे तरल हो उठती है।)

गंगूबाई : साहेब, अभिजीत साहेब जैसा दूसरा इन्सान इस दुनिया में कहीं नहीं मिलेगा। वो तो देव आदमी था, देव साहेब। देखो कैसा देव बनकर बैठा है। उसने मुझे कभी पराया नहीं समझा। सग्गी बहन से भी ज्यादा प्यार करता था वो मुझसे। मेरे को साहेब और मेमसाहेब

दोनो ने हमेशा साथ दिया। कभी गरीबी का अहसास नही होने दिया। (पल्लू से आँखे पोंछने लगती है)

सुप्रिया : गंगूबाई तुम्हारा साहेब सच में ही देव आदमी था... वो चले गये पर बच्चों से अपने पिता की छत छिनने नहीं दी। मुझे बेसहारा नहीं छोड़ा। वे जाते-जाते भी अपनी जिम्मेदारी नहीं भूले। उन्होंने मेरा हाथ आलोक के हाथ में सोंप दिया था।

गंगूबाई : पर इतने अच्छे मेरे साहेब की लोगो ने जान लेली। उन लोगों को बरदाश्त नहीं हुआ कि चार-चार लड़कियाँ हो गयी फिर भी साहेब इतना खुश कैसे हैं? ताने मारमार कर उन्होने मार दिया उनको। कहते थे - लड़कियाँ बोझ होती हैं। लड़कियाँ परायाधन होती हैं। लड़कियाँ पिता का नाम रौशन नहीं करती। क्यों लड़कियों पर रूपये बरबाद करते हों।

आलोक : गंगूबाई जो बित गया, उसे जाने दो। हमे उन लोगों को करारा जवाब देना हैं। उन्हे बताना है कि लड़कियाँ किसी भी मामलों में लड़कों से कम नहीं होती हैं। सुप्रिया मैं चलता हूँ, पेशंट मेरी राह देख रहे होंगे।

सुप्रिया : हां-हां मैं भी बाहर से सब्जियाँ लेकर आती हूँ। गंगूबाई भीतर बरतन रखे है मांज लेना (भीतर से थैली लेती है और बाहर चली जाती है। गंगूबाई भीतर बरतन माँझने के लिये चली जाती है।

पगली : मेरा मुन्ना है तू... (एक कोने से दूसरी ओर चली जाती हैं।)

(मंच पर अंधेरा होता है।)

दृश्य – तीन

(स्थान वही घर। एक माह पश्चात। बड़ी लड़की रीना प्रसिद्ध गीत पर नृत्याभ्यास कर रही है । पूरा परिवार दर्शक बने देख रहा है।) (पगली मंच पर एक कोने में है) (रीना का डान्स खत्म होते ही सभी तालियाँ बजाकर उसका हौसला बढाते हैं)

करीना : (करीना रीना की दो नंबरवाली बहन है। उम्र २० साल। उठते हुये।)

अरे वाह, दीदी! आज तो तूने कमाल कर दिया। तेरा डान्स इतना अच्छा हुआ कि अब तुझे डान्स ईंडिया डान्स के काँपिटेशन के फाईनल में जीतने से कोई भी नहीं रोक सकता। (कहते हुए रीना के गले लिपट जाती है)

रीना : थ्याँक्यू करीना! ...पर जरा साँसे तो लेने दें।

टीना : (चौथी बहन – हँसोड़ – उम्र १६) हां दी, करीना दी सही कह रही है। रीना की टांग खींचते हुए (मजाक करना) अभीनय करती है। वह फाईनल का स्टेज... दर्शकों से खचाखच भरा हुआ स्टेडियम । जब रिझल्ट अनाउंस किया जायेगा तब नीचे से एक ही आवाज गूंजेगी, रीना... रीना... रीना...। तब दोनों में से किसी एक का नाम लिया जायेगा । डान्स ईंडिया डान की वीनर है । धक्–धक्, धक्–धक्, धक्–धक्...।

मीना : (तीसरी बहन – उम्र १८) अरे जल्दी से रिझल्ट बोल दे टीना कहीं दीदी को हार्ट अटैक न आ जाये।

टीना : मेरी दी, इतनी कमजोर थोडे ही न है, जो इतने से घबरा जाये वह तो शेरनी है, शेरनी।

मीना : अच्छा-अच्छा ठीक है । अभी आगे भी बढेगी या यूँही मुझसे लड़ती रहेगी।

टीना : हां तो, मैं कहाँ थी। धक्-धक्, धक्-धक्, धक्-धक् और इस फाईनल को पास के ही शिशू केन्द्र पर, पाँच सालतक के बच्चों को जरूर पीलायें...

करीना : टीनू, यह सब क्या है?

टीना : दी, जब फाईनल रिझल्ट चल रहा होगा, तब बीच में ही टी.व्ही. पर ॲडव्हर्टाईज होगा की नहीं? और भाई दर्शको को इतनी आसानी से रिझल्ट कैसे बतायेंगे। थोडी टी.आर.पी. चाहिये ना।

करीना : टीनू, तू बात तो पते की कर रही है। तू तो बडी टायलेन्टेड है।

टीना : हूँ, तो फिर बहन किसकी हूँ। (रीना से लिपट जाती है)

रीना : अरे, छूटकी रिझल्ट तो बतायेगी, या यूँ ही अपनी दी को परेशान करेगी।

टीना : हां-हां बताती हूँ, बताती हूँ। और इस साल के विजेता है... रीना देशमुख। (सभी तालियाँ बजाते है। टेबल पर रखी हुई फ्लावर पॉट उठाकर मम्मी-पप्पा को देते हूए...। और इस साल के विजेता को ट्राफी देने के लिये मैं यहाँ आमंत्रित करती हूँ - श्री आलोक देशमुख और सौ. सुप्रिया देशमुख को (सोफे पर बैठे मम्मी-पप्पा का हाथ पकड़कर लाती हैं।)

रीना : टीनू की बच्ची (कान पकड़ते हुए) मम्मी-पप्पा को नाम से बुलायेगी।

आलोक : रहने दे बेटा, कोई बात नहीं। अभी वह छोटी है। अपने मम्मी–पप्पा से मजाक नहीं करेगी तो किससे करेगी।

रीना : पर...

टीना : पर– वर कुछ नहीं। (फ्लावर पॉट मम्मी–पप्पा को थमाते हुये) यह लो मम्मी–पप्पा यह ट्राफी दी को दे दो। (हाथ मे कैमरा लिये) रूको–रूको एक फोटो निकालते हैं। स्माईल प्लीज।

(गंगूबाई का प्रवेश – एक माह की छुट्टी के बाद वह आयी है)

रीना : (गंगूबाई को देखकर) अरे, वह देखो गंगूबाई आयी है। इतने दिन कहाँ थी गंगूबाई । तुम तो एक महीने के लिये गायब ही हो गयी थी।

आलोक : जरा उसे साँस तो लेने दो।

सुप्रिया : आओ गंगूबाई, आओ बैठो (कूर्सी पर बैठने के लिये कहती है)

करीना : गंगूबाई क्या हुआ ? तुम्हारा चेहरा तो मुर्झाया हुआ दिखायी दे रहा है।

सुप्रिया : हां गंगूबाई, क्या हुआ? क्या बात है? क्या तेरे पति ने तुझे पीटा?

गंगूबाई : नहीं मेमसाहेब, वह तो बड़ा गाय है। वह क्या मुझे पीटेगा।

सुप्रिया : तो क्या बात है, बताना । हम क्या कोई पराये है। हमसे क्या छिपाना।

गंगूबाई : नही मेमसाहेब, वैसी बात नहीं।

सुप्रिया : तो फिर कैसी बात है? बताना । अरे हां, तेरी लड़की पेट से थी ना, क्या हुआ? लड़का या लड़की।

गंगूबाई : अभी कहाँ हुआ लड़का या लड़की? आज या कल में पता चल जायेगा कि लड़का हुआ या लड़की।

आलोक : तो क्या हुआ, गंगूबाई?

गंगूबाई : (पल्लू से आँखो पोछते हुये) साहेब क्या बताउँ आपको । मेरी मुलगी को लड़की हुई तो मैं खुश, मेरा पति भी खुश होगा और खुशी में शराब भी छोड़ देगा। पर (रोती है)

सुप्रिया : हां, हां, आगे बताओ।

गंगूबाई : मेमसाहेब, उसके ससुरालवाले खुश नहीं होंगे। उन्होंने मेरी मुलगी को यह कहकर भेजा था कि पहले ही दो-दो लड़कियाँ हैं। अब की लड़का ना हुआ, तो घर लौटकर मत आना। समझ लेना तेरा पति हमेशा के लिये मर गया हैं। अब तुम ही बताओं साहेब मैं क्या करूँ? उन्हें कैसे बताऊँ इसीलिए मैं काम पर नहीं आयी। (पल्लू और हाथ से मुँह छिपाते हुए रोती है)

टीना : (बाहर चली जाती है)

मीना : माँ! क्या सच में लड़कियाँ इतनी बोझ होती हैं। लड़की होगी तो क्या हो जायेगा? कौनसा आसमान टूट पटेगा? जो उसके ससुरालवाले उसे अपने घर नहीं लेंगे? माँ उसकी सास भी तो एक स्त्री ही है ना। क्या, एक स्त्री दूसरे स्त्री की वेदना और पीड़ा को नहीं समझ सकती?

रीना : हां माँ, लोग कहते है कि लड़कियाँ बोझ होती हैं। वह परायाधन होती हैं । कहते है, लड़कियाँ पढ लिखकर क्या करेगी? चुला-चक्की और घर-गिरस्ती ही तो सम्हालना हैं।

करीना : मम्मा, लड़कियों को ही क्यों मार दिया जाता है। जन्म होने से पहले ही, आँख खुलने से पहले ही उसकी आँखे क्यो बंद कर दी जाती हैं? जिसने अभी दुनिया भी नहीं देखी थी। उस अजन्मे भ्रून की गला रेत कर हत्या...? घृणा है, उन लोगों से मम्मा मुझे घृणा हैं। लड़कियाँ तो आज हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं ना?

आलोक : बेटी, तुम सच कह रही हो, बेटियाँ आज किसी भी मायनों में लड़को से कम नहीं होती। मेरी ही बेटियों को ले लो। सभी एक से बढकर एक। सभी अपने माता-पिता का नाम रोशन कर रहे है। रीना डान्स में अव्वल है। एक दिन वह सफल कोरियोग्राफर बनेगी। करीना बहुत बडी सींगर बनेगी। मीना फिल्मों में अभिनेत्री और टीना हर दुःखी इन्सान को हँसायेगी।

(टीना बाहर से दौड़ते हुये आती है)

टीना : (हाफते हुये) गंगूबाई... गंगूबाई तेरी मुलगी के पेट में पीड़ा शुरू हो गयी है। उसे तेरे पति ने अस्पताल में भर्ति करवा दिया है।

आलोक : क्या मुझे चलना होगा। मैं चलता हूँ। (अस्पताल के लिये निकलता है)

गंगूबाई : साहेब, मैं भी चलती है।

सुप्रिया : चलो... चलो हम सभी चलते है। (सभी बाहर चले जाते है)

पगली : मेरा मुन्ना है तू... कहते हुये एक ओर से दूसरी ओर चली जाती है।

(मंच पर अंधेरा होता है)

दृश्य – चार

(स्थान – अस्पताल) (प्रकाश पगली पर केन्द्रित होता है।)

पगली : मेरा मुन्ना है तू। मेरा सूरज है तू। ओ मेरे आँखो का तारा है तू। (गाते हुये मंच पर नाच रही है। हाथों से गुड़िया नीचे गिर जाती है। पगली स्त्री के मुख से चीख निकलती है। नीचे गिरी हुई गुड़िया उठाते हुये) मेरा बच्चा! मेरा लाल! तुझे कहीं चोट तो नहीं लगी। बोल–बोल तू मुझसे बोलता क्यों नहीं है (गुडिया को कानों से लगाकर धड़कन सुनती है। चीखते हुये।) नही... तू मुझे छोड़कर नहीं जा सकती। मेरे लाल, मेरे कलेजे के टुकड़े। (पगली से प्रकाश हटते हुये गंगूबाई, ऑप्रेशन थियेटर और पूरे अस्पताल में होता हैं।) (गंगूबाई गणपति बप्पा के पास बैठी प्रार्थना कर रही है। ऐसे में बच्चे की आवाज आती है। आलोक नवजात शिशू को लेकर बाहर आते है।)

गंगूबाई : (उत्सुकता और भय के साथ) क्या हुआ?

आलोक : बधाई हो गंगूबाई, बधाई हो। आप फिर से नानी बन गयी हो। मीठाई बाटो, मीठाई, लड़की हुई है। तुम्हारे घर लक्ष्मी आयी है।

गंगूबाई : क्या लड़की हुई है। अरे, माझ्या देवा! (दोनो हाथ सिर पर लगाते हुये नीचे बैठती है) यह क्या मेरे नसीब में आया। मैंने पिछले जनम में जरूर कोई पाप किये थे। जो आज ये दिन देखने पड़ रहे है। (वह छाति पर हाथ पीटते हुये रोने लगती है।)

आलोक : गंगूबाई इस मासुम ने क्या पाप किया है? जो इसके आने से इतना दुःखी हो रही हो। देखो जरा, इस मासुम चेहरे की ओर देखो। और तुम इसके आने से छाती पीटकर रो रही हो। यह तो प्रकृति का अनमोल उपहार है।

गंगूबाई : यह मेरे लिये उपहार नहीं साहेब। शाप है, शाप। साहेब में आपके पाँव पडती हूँ। (कुछ निर्धारित करते हुए) आप इसे मरा हुआ घोषित कर दीजिये।

आलोक : गंगूबाई, मेरे पैर छोड़ो। आखिर तुम ऐसा क्यों कर रही हो?

गंगूबाई : क्या, बताऊँ साहेब। मेरी मुलगी के ससुरालवालो ने साफ-साफ कहा था। अब की लड़की हुई तो समझलेना तेरा पति सदा-सदा के लिये मर चुका है। इसीलिये कहती हूँ साहेब इसे मरा हुआ घोषित कर दो।

आलोक : कितने निर्दयी है ये लोग। अगर हमारे बस में लड़का या लड़की जनना होता। तो यह सृष्टी कब की समाप्त हो चुकी होती।

पगली : (अचानक) ये बच्चा मुझे दे दो। मैं पालुंगी इसे। दे दो, दे दो।

आलोक : ए पगली हट... जा उधर जाकर बैठ।

पगली : (पिछे हटते हुये) बाबू दुनिया में ऐसे कई लोग है। जो बच्चों को पालना चाहते हैं। चाहे वह लड़की हो या लड़का । हूँ... उन्हे तो बस संतान सुख चाहिये। (गुड़िया की और देखकर) मेरा मुन्ना है तू...।

आलोक : चुप बैठ पगली कहीं की। गंगूबाई मैं इसे गोद लेता हूँ। मैं इसे पालुंगा। ना मैं इसे मरने दूंगा और ना मैं इसे अनाथों की तरह जीने दूंगा। मैं इसे पिता का प्यार दूंगा

और यही मेरा पश्चाताप होगा। मेरे ही कारण मेरी पत्नी और पुत्री इस दुनिया को छोड़कर चले गये। इसमें मैं अपनी मरी हुई बेटी का चेहरा देख रहा हूँ। इसीसे मेरी पत्नी और बेटी की आत्मा को शान्ति मिलेगी और मुझ पर लगे हुये कलंक से मुक्ति भी।

(मंच पर धीरे–धीरे अंधेरा होता है)

दृश्य – पांच

(घर का दृश्य – मंच पर धीरे–धीरे प्रकाश होता है। कोने में बैठी पगली से केन्द्रित प्रकाश पूरे घर में होता हैं।) (रीना ने डान्स ईंडिया डान्स का फाईनल जीत लिया है । इसीलिये उसके चाहनेवालो के साथ पडोसी भी फूल–मालायें, पुष्प गुच्छ लेकर आते हैं। और आलोक के परिवार को बधाईयाँ दी जाती हैं।) (सारा परिवार मंच पर उपस्थित हैं। आलोक के बाई और पडोसी खडे हैं तो दायी और परिवार खड़ा हैं।)

पड़ोसी एकः आलोक जी, आपकी लड़कियों ने आपका ही नाम नहीं बल्कि हमारा भी नाम सारी दुनिया में रौशन कर दिया हैं।

पड़ोसी दो : हां आलोक जी, लड़कियाँ होकर कहॉ से कहॉ पहुँच गयी और हमारे लड़के जीन पर हम नाज किया करते थे। वे आज निकम्मों की तरह घर पर निट्ठले बैठे हैं। हमने आपकी चार–चार लड़कियाँ होने पर मजाक उड़ाया था। हम आज आपसे और अभिजीत से माफी माँगते है । हमारे की कारण अभिजीत को अपनी जान

गवांनी पड़ी। सुप्रिया जी हम आपके अपराधी हैं हमे माफ कर दीजियें।

पड़ोसी तीन : काश हमारे यहाँ भी एखाद लड़की होती। आलोक जी आप सच में ही भाग्यवान हैं । जिनके यहाँ इतनी होनहार लड़कियों ने जन्म लिया हैं। आपको बधाई हों।

आलोक : (आलोक पर प्रकाश केन्द्रित होता है) अभिजीत मैंने तुम्हे दिया हुआ वचन पूरा कर दिया। देखो जिन लोगो ने तुम्हे ताने मारे थे। आज वे ही बधाईयाँ देने के लिये आये है और अपने यहाँ लड़कियॉ न होनेपर पछता रहे हैं । इन्ही के कारण तुम्हने दुनिया को अलविदा कह दिया था।

(प्रकाश आलोक पर धीमा होते हुये अंधेरा होता हैं। मंच के अगले कोने में अभिजीत पर प्रकाश केन्द्रित होता है।) (लोग चारो तरफ से ताने मार रहे हैं।)

एक : लड़कियाँ बोझ हैं।

दो : लड़कियाँ पराया धन हैं।

तीन : लड़कियाँ पिता का नाम रौशन नहीं करतीं।

चार : हम उसे जला देंगे।

पाँच : हम उसे मार देंगे।

सभी : मारों-मारों एक भी लड़की बचने न पाये। मारो-मारो-मारो-मारो-मारो-मारो (अभिजीत के इर्दगिर्द घुम रहे हैं।)

अभिजीत : (चिल्हाते हुए, दोनो हाथ कानों पर रखता है।) नहीं...। बस करो-बस। लड़कियाँ बोझ है। पराया धन है, पिता का नाम रौशन नही करती। जला दो, मार दो, मारो-

मारो। (सभी पिछे हटते हुये अंधेरे में चले जाते है।) मैं आप सब से पुछता हूँ, आखिर क्यों मारो? क्या तुम्ह भूल गये तुम्हारा जन्म किसी स्त्री से हुआ हैं। यही स्त्री तुम्हारी माँ हैं, बेटी हैं, बहन हैं, पत्नी हैं। अरे परंपरा से ग्रसित मुर्ख लोगो नारी वह शक्ति हैं, जो बड़े से बड़े साम्राज्य की नीव हिला सकती है। क्या तुम भूल गये झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई? जिसने एक औरत होकर भी अंग्रेजों की ईंट से ईंट बजा दी थी। नारी वह सच्ची पतिव्रता पत्नी है, जो पति के साथ जलकर भस्म हो जाती हैं। याद करो चित्तोड़ की रानी का जौहर। नारी आज हर क्षेत्र में आगे है। राष्ट्रपति प्रतिभा पाटील, सोनिया गांधी, किरण बेदी, कल्पना चावला, सुनिता विल्यम्स, लता मंगेशकर, ऐश्वर्या रॉय क्या ये सभी बोझ हैं।
मैं अपनी लड़कियों को ऐसे बनाऊँगा। एक दिन तुम ही अपने यहाँ लड़कियाँ ना होने पर पछताओंगे।
(धीरे-धीरे मंच पर अंधेरा)

दृश्य – छह

(दृश्य – आलोक का घर – दिवार से अभिजीत की तस्वीर हटा दी गयी हैं। नैपश में मामुली परिवर्तन। मंच पर एक पलंग है, उसपर सुलोचना सो रही है। दिन निकल चुका है। आलोक अपनी दाढ़ी बना रहा है।)

सुलोचना : (वही पगली स्त्री है, लेकिन अब सजी-धजी समझदार स्त्री जैसी है। नींद से अचानक चिखते हुये जागती है।) नही... मैं अपनी लड़की को मरने नही दूंगी। (आलोक दौड़कर सुलोचना के पास आता है।)

आलोक : क्या हुआ सुलोचना? ऐसे क्यों घबरा गई? और कौन हमारी लड़की को मार रहा है? अभी तो उसका जन्म भी नहीं हुआ है। कुछ नहीं होगा हमारी लड़की को कोई नहीं मारेगा।

सुलोचना : (चेहरे पर पसीना छूट रहा हैं। वह घबराई, सहमाई-सी आलोक के गले लिपटते हुये कहती हैं)
आलोक मैंने एक भयानक सपना देखा...।
मंच पर अंधेरा होता है । प्रकाश आलोक पर केन्द्रित छल भरी मुस्कान के साथ पूनः अंधेरा होता हैं।

पार्श्व से आवाज : माँ, कब तक बलि दी जाएगी?
माँ, कब तक बलि दी जाएगी?
झूठी रूढि-परंपरा के नाम पर।
चीख भी न निकले ऐसे काम पर।
क्या गुनाह है मेरा?
स्त्री भ्रून बनकर आना।
बेटियों के नाम पर तलवारें खींचे जाना।
बेटा हो तो मनाएँ दीवाली,
बेटी हो तो खेलेंगे खून की होली।
माँ, कब-तक बलि दी जाएगी?
माँ, कब-तक बलि दी जाएगी?

●●●